काशी में संगीत

संगीतेतर क्षेत्र के संगीत प्रेमी विद्वान्- पं. बलदेव उपाध्यायकृत 'काशी की पाण्डिल-परम्परा के अध्ययन से ऐसे अनेक विद्वानों के विषय में ज्ञात है, जो व्याकरण, ज्योतिष, पुराण, इतिहास, न्याय, मीमांसा, तंत्रशास्त्र, वास्तुकला, सामवेदीय परम्परा, साहित्य, दर्शन इत्यादि क्षेत्रों के विशिष्ट विद्वान् होने के साथ-साथ संगीतशास्त्र के रसिक ज्ञाता भी थे, जिनका संगीत प्रेम भी अनुकरणीय अप्रतिम एवं दर्शनीय था। कुशल वाग्गेयकर, गायक वादक होने के साथ ही संगीत के विविध पक्षों के सफल, सत्यनिष्ठ, तटस्थ निर्णायक, लेखक और संगीतपोषक के रूप में भी उन्हें ख्याति प्राप्ति थी।

श्री शिवलाल पाठक- प्रख्यात दैवज्ञ पं. लक्ष्मीपतिजी के पटुशिष्य शिवलाल पाठक १८वीं शती के अन्तिम चरण में काशी के अस्सी संगम के समीप निवास करते थे। त्रिस्कन्ध-ज्योतिष शास्त्र में परिगामी, पुराण इतिहास, तंत्रशास्त्रवेता, ज्योतिर्विद्, वास्तुकला में चतुर एवं संगीतविद्या के नितान्त मर्मज्ञ तथा रसिक संगीत प्रेमी विद्वान थे।

श्री शिवकुमार शास्त्री- वाराणसी के उन्दीग्राम में विक्रम संवत् १८५७ ई. में उत्पन्न विश्व-विश्रुत-विद्वान श्री शिवकुमार शास्त्री, विशिष्ट संगीत विद्वान संगीत सभाओं के रसिक संकीत प्रेमी, संगीत प्रतियोंगिताओं के निष्पक्ष-निर्णायक तथा सुयोग्य आलोचक के रूप में प्रख्यात थे। आप द्वारा संगीत सभाओं में दिये गये निष्पक्ष निर्णयों का प्रशंसात्मक उल्लेख उस समय के लोकप्रिय, प्रसिद्ध समाचार पत्र 'भीरतजीवन' में बड़े आदर के साथ प्रकाशित होता था, जो आज भी उस समाचार की पुरानी फाइलों में उपलब्ध है। इरूद्र काशिकेय से साभीर प्राप्त।ट

श्री दामोदरलाल गोस्वामी- महामहोपाध्याय श्री गंगाधर शास्त्री एवं नवद्वीप के प्रसिद्ध नैयायिक श्री राखालदास 'न्यायरत्न' के आप पटु शिष्य थे। आपके विद्याभूषण वनमालीलाल महाराज (वृन्दावन) सभी और संगीतकला के प्रकाण्ड ज्ञाता एवं गुणग्राही संगीत रसिक साधक एवं श्रोता थे।

पण्डित सुदर्शनाचार्यजी- महामहोपाध्याय पं. गंगाधर शासमत्री के प्रमुख शिष्य, पंचनदीय पं. सुदर्शनाचार्यजी साहित्य, दर्शन एवं संगीत के प्रकाण्ड विद्वान्, रामानुजी वैष्णव, वीणा वादन में अत्यन्त निपुण, मूलतः पंजाब निवासी थे, जो काशी के ब्रह्माघाट मुहल्ले में रहते थें। आप द्वारा संगीत शासमत्र की लिखित पुस्तक का प्रकाशन इण्डियन प्रेस, प्रयाग से हुआ था जिसकी भूरि-भूरि प्रशंसा विद्वानों ने कीथी। इन्होंने अपनी मृत्यु के पूर्व स्वयं भी अत्यन्त प्रिय वीणा गवर्नमेणट-संस्कृत कालेज को दान कर दी।

पं. चन्द्रधर शर्मा- आप डॉ. दामोदर शास्त्री के प्रिय शिष्य एवं न्याय, व्याकरण, साहित्य के अत्यन्त गम्भीर विद्वान थे। पहले अयोध्या के राजगोपाल पाठशाला में अध्यापक थे। बाद में महामना मदन मोहन मालवीय के अतिशय प्रिय आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में साहित्य के प्राध्यापक नियुक्त हुए और अपने गाम्भीर्यपूर्ण अध्ययन से विश्वविद्यालय की गरिमा बढ़ाई तथा विद्यार्थियों को लाभान्वित किया। अपने साहित्यिक अनुशीलन
के साथ-साथ सितारवादन की ओर आपकी रूचि थी और सितार के निपुण वादक के रूप में आपकी प्रतिष्ठा थी।

पं. मोहनलाल वेदान्ताचार्य- आप मूलतः पंजाब के गुरूदासपुर के डेहरा ग्राम के थे और गुरूनानकवंश की १३वीं पीढ़ी में पैदा हुए थे। बाल्यावस्था से ही आप विरक्त स्वभाव, एकान्तप्रिय, भजन-कीर्तन में समय व्यतीत कर निमग्न रहा करते थे और एक दिन ऐसा भी आया, जब आप भजन-कीर्तन गाते, भ्रमण करते हुए अपने पैतृक निवास स्थान से सैकड़ों मील दूर काशी आए और महामहोपाध्याय पं. राम मिश्र शास्त्री से दर्शनशास्त्र का विशद अध्ययन कर पारंगत हुए। आप अपने शआस्त्र के साथ ही गायन आदि कलाओं में निपुण थे।

महामहोपाध्याय श्री आदित्य भट्टाचार्य- आप हिन्दू कुलश्रेष्ठ महामना पंडित मदनमोहन मालवीय के प्रथम गुरू तथा काशी

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रथम प्रो. चानसलर थे। हिन्दी, उर्दू, बंगला, फारसी, संस्कृत, पंजाबी आदि अनेक भाषाओं के भाषाविद्, इन सभी भाषाओं में उत्कृष्ट भजन गायक, इकतारा बजाकर, भजन गाने के अभ्यासी, संगीत-प्रेमी विद्वान् सर्वभाषी, सर्वधर्म, सर्वसम्प्रदाय के प्रति समभाव रखने वाले, आजीवन विद्यादान करने वाले, विद्याव्यसम्ा विलक्षण विद्वान् थे।

आचार्य आनन्दशंकर बापू भाई ध्रुवजी- अप्रतिम विद्वान्, उत्कृष्ट भाषाविद् प्रशासनिक क्षमता के आदर्श पुरूष श्री बापू भाई ध्रुवजी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अंग्रेजी, संस्कृत, साहित्य, आट्र्स कालेज, साइन्स कालेज, ला कालेज आदि के समय-समय पर प्रिन्सिपल नियुक्त किए गए और बाद में अनेक वर्षों तक आपने काशई हिन्दू विष्वविद्यालय के प्रोचान्सलर पद को सुशोभित किया। उत्कृष्ट प्राध्यापक, प्रशासक, प्रकाण्ड विद्वान् कंठसंगीत में दिक्षित, विशिष्ट अभिरूचि सम्पन्न मूर्धन्य कालसेवी विद्वान् थे।

श्री काष्ठजिह्व स्वामी- काशी नरेश महाराज ईश्वरी नारायण सिंह के अत्यन्त आदरणीय राजगुरू, रामनगर की विश्वप्रसिद्ध रामलीला के संस्थापक श्री काष्ठजिह्व स्वामी अपने युग के विलक्षण वीतराग, दर्शनशास्त्र, वेदान्त, साहित्य एवं संगीत शास्त्रों के गहन अहयेता एवं गंभीर विद्वान् थए। आपने अपनी गहरी आध्यात्मिक रूचि के अनुकूल भक्ति-रस से ओतप्रोत सहस्त्रों गेय पदों और विभिन्न राग रागिनियों एवं विभिन्न तालों में सैकड़ों ख्याल, ठुमरी दादरा, चैती, कजली, घाटों, भजन आदि की रचनाओं को लिपिबद्ध करके संगीतकला को समृद्ध करने में अपना विशिष्ट योगदान दिया।

श्री देवनारायण त्रिपाठी- आप मूलतः बिहार के निवासी थे। काशी के ब्रह्मनाल मुहल्ले में रहते हुए संगीतकला के अध्ययन और प्रचार-प्रसार के लिए आपने 'नारायण संगीत-संस्कृत विद्यालय' की स्थापना कीथी। स्वयं अनेक शास्त्रों के ज्ञाता एवं मर्मज्ञ विद्वान होने के साथ ही तबलावादन में भी अत्यन्त निपुण थे। विद्यार्थियों में संगीत-अभिरूचि जागृत करने के लिए निःसुल्क विद्यादान करने में तत्पर रहा करते थे। यद्यपि आपकी इस उदात्त भावना एवं संगीतसेवा से कम ही लोग परिचित हो पाये, किन्तु उनका मूल्यांकन कम करके नही आंका जा सकता। सन् १९८२-८३ ई. के लगभग काशी में ही आप दिवंगत् हुए। उनके प्रिय सुयोग्य पालित शिष्य देवानन्द पाठक जो स्थानीय हरिश्चन्द्र इष्टरमीडिएट कालेज में कंठ संगीत के अध्यापक पद पर कार्यरत हैं, प्रतिवर्ष अपने पूज्य गुरू का स्मृति दिवस समारोह आयोजित कर अनेक प्रसिद्ध संगीतज्ञों सहित अपनी संगीतांजलि श्रद्धांजलि अर्पित करते आ रहे है।

श्री सीताराम चतुरवेदी- हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, बंगला आदि अनेक भाषाओं पर अधिकार रखने वाले उद्भट विद्वान्, साहित्य जगत के मूर्धन्य कवि, लेखक, समालोचक, पत्रकार के रूप में लोकप्रिय, प्रतिष्ठा प्राप्त
आचार्य सीताराम चतुर्वेदी संगीत कला के अनुशीलन के साथ-साथ संगीत शास्त्रों के अध्ययन, मनन, चिन्तन, में भी विशेष रूचि ली। आप संगीत कला के भावपक्ष, कलापक्ष के मान्य विद्वान, सुधी श्रोता ही नहीं आपितु संगीतकला के पोषक भी थे। बलिया के मुरली मनोहर टाऊन डिग्री कालेज के प्राचार्य पद को सुशोभित करते हुए आपने वहाँ संगीत की समुचित शिक्षा का प्रबंध करने में अपना विशेष सक्रिय योगदान देकर अनेक गुणी संगीतज्ञों की सेवाएँ प्राप्त की। साहित्य एवं संगीत जगत् दोनों ही क्षेत्रों में उद्भट विद्वानों का सहज स्नेह आपको प्राप्त रहा।

इन कतिपय प्रसिद्ध महानुभावों के अतिरिक्त श्री पं. पटुकनाथ शर्मा सितार बजाने में निपुण, विशिष्ट संगीत प्रेमी श्री बालशास्त्री सामगायन के सरस गायक म.म. गंगाधर शास्त्री तैलंग, श्री रामशास्त्री तैलंग, काशी के 'व्याकरण केशरी' योगेश्वर शास्त्री के पटु शिष्य श्री लक्ष्मण शास्त्री तैलंग आदि संगीतशास्त्र के निष्णात विद्वान तथा सुबुद्ध संगीत प्रेमी के रूप में प्रसिद्ध थे।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.